हार-जीत

आप सोचते होंगे कि जो व्यक्ति अपने अंतर मार्गदर्शक के साथ रहता है, क्या वह हमेशा विजयी रहता है? वह हमेशा जीतता नहीं है, लेकिन वह जीते या हारे परंतु हमेशा आनंदित रहता है। दूसरी ओर, जो व्यक्ति अपने अंतर मार्गदर्शक के साथ नहीं रहता है, वह हमेशा आनंदित नहीं रहता है, भले ही वह जीत जाए।

यहाँ, विजय निर्णायक कारक नहीं है, क्योंकि यह कई कारकों पर निर्भर करता है। इसके बजाय, आनंदित रहना निर्णायक कारक है, क्योंकि यह केवल आप पर निर्भर करता है। आप दूसरों की प्रतिस्पर्धा के कारण हार का सामना कर सकते हैं, लेकिन आप अपने अंतर मार्गदर्शक के साथ काम करते हैं, जबकि आपके आसपास के लोग चतुराई से, कपटपूर्ण ढंग से, रणनीतिक रूप से, पाखंडपूर्ण और दुर्भावनापूर्ण तरीके से काम करते हैं।

जब आप जन्म लेते हैं, तो आपके लिए पहले से ही एक नियति लिखी जा चुकी होती है। आपको यह नियति मिटाने का तरीका भी सीखना होगा जो आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से संभव है। इसका कारण यह है कि नियति का प्रभाव बहुत मजबूत है, और आप अपनी इच्छा के अनुसार कुछ हासिल नहीं कर पा सकते हैं। जैसा कि कहा जाता है, 'अगर आप एक चीज़ सोचते हैं, तो भगवान दूसरी चीज़ सोचते हैं।' इसका अर्थ है कि भले ही आप कुछ चाहें, यह केवल तभी होगा जब आपका अंतरात्मा इसके साथ सहमत हो। इसलिए, पहचानें कि आपके अंदर कई बाधाएं हैं।

इसलिए, विजय कई कारकों पर निर्भर करती है। इसलिए आपके सामर्थ्य और निपुणता को, सफलता के आधार पर मत पहचानिए, बल्कि आनंद के आधार पर पहचानिए। देखो, मेरी प्रतिभा यह है कि जब मैं परेशानी में भी होता हूँ, तब भी मैं आनंदित रहता हूँ, खुद से कहो यह बात।

उदाहरण के लिए, जब आप वह प्राप्त कर लेते हैं जो आप चाहते थे, तो आप सोचते हैं कि आपने विजय प्राप्त कर ली है। मान लीजिए कि आप व्यापार कर रहे है। फिर आप सोचते हैं, 'मुझे हर दिन कम से कम 5000 रुपये कमाने होंगे।' यदि आप जितना सोचते हैं उससे कम कमाते हैं, तो आप दुखी हो जाते हैं। इसी तरह, भले ही आप जितना सोचते हैं उससे अधिक कमाते हैं, तो आप कुछ समय के लिए खुश हो सकते हैं, लेकिन फिर से तनावग्रस्त हो जाते हैं।

क्योंकि आपको यकीन नहीं है कि कल आप उतनी ही रकम कमा पाएंगे, इसलिए आप चिंता की स्थिति में फंस जाते हैं। इसी तरह, जीवन के सभी पहलुओं में, आपकी कई इच्छाएं और अपेक्षाएं हैं, लेकिन उनमें से कोई भी पूर्ण तरह से पूरी नहीं हुई है। इसलिए, यह स्वीकार करें कि जीत और हार, कठिनाइयां और सुख, हर किसी के जीवन का एक अंग हैं। कई लोग कठिनाई का सामना करने पर उदास हो जाते हैं और सुख का अनुभव करने पर अत्यधिक प्रसन्न हो जाते हैं। इसके बजाय आपको हमेशा आनंद रहना है, तो इसका समाधान कष्ट-सुख में, सफलता-असफलता में, लाभ-नष्ट में, चाहे जो कुछ भी हो हमेशा आनंद से रहना है।

इसलिए, सांसारिक दृष्टिकोण से, यदि आप अपने अंतर मार्गदर्शक या अंतर्ज्ञान का पालन करते हैं, तो आप हमेशा विजयी नहीं हो सकते हैं। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, आप हमेशा विजयी होंगे। आध्यात्मिकता में, आनंद ही विजय का निर्णायक है, चाहे आप बाहरी समस्याओं का सामना करें या बाहरी सफलता या असफलता प्राप्त करें। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि आप हमेशा आनंदित रहें।

चाहे दुनिया आपको असफल माने या सफल नायक, इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ता। आप हर परिस्थिति में आनंदित रहते हैं। इसलिए, मेरे विचार में, आनंद ही विजय है। यदि आप समझते हैं कि आनंद ही विजय है, तो मैं कहता हूँ कि आप हमेशा अंतर्ज्ञान के माध्यम से विजय प्राप्त करते हैं।

लेकिन अगर आप ऐसी मानसिकता के साथ जीते हैं कि, आप केवल तब आनंदित हैं जब आप स्वस्थ हैं, या कि आप दूसरों के बिना नहीं जी सकता, या कि आप केवल तब मूल्यवान हैं जब आप विजय प्राप्त करते हैं, या कि आपको नौकरी मिलने के बाद ही खुशी मिलेगी, तो चाहे आप कितना भी हासिल करें, आप अंततः कमजोर और बाहरी कारकों से प्रभावित हो जाएंगे। इसका मतलब है कि आपके पास मानसिक विकलांगता है, क्योंकि आपका आनंद आपके नियंत्रण में नहीं है, बल्कि 100% बाहरी परिस्थितियों और दूसरों पर निर्भर है।

हालांकि, कई लोगों के लिए, आनंद विजय नहीं है; विजय कुछ और है, जो दर्दनाक हो सकता है। यह जानते हुए कि विजय दुख लाती है, फिर भी इसकी इच्छा करते हैं। सांसारिक दुनिया में सफलता प्राप्त करने वाले भी मुझे दुखी लगते हैं, क्योंकि उनकी सफलता उन्हें नए समस्याएं पैदा करती है। ऐसे लोग मुझसे सलाह लेने आते हैं। और जो लोग सांसारिक दुनिया में असफलताओं का अनुभव करते हैं, उनकी स्थिति का उल्लेख करने की भी जरूरत नहीं है।

इसी तरह, यह जानते हुए कि धनवान लोग भी दुखी हैं, कई लोग अपनी वर्तमान स्थिति से असंतुष्ट हैं और अधिक धन जमा करने के लिए प्रयास करते हैं। चाहे वे कितना भी दुख सहन करें, उनका लक्ष्य किसी भी कीमत पर विजय प्राप्त करना है। तो फिर, सांसारिक लोगों के लिए विजय क्या है? उनके लिए, विजय का अर्थ अपने अहंकार को संतुष्ट करना है, आनंद का अनुभव नहीं करना है। वे विजय प्राप्त करके दूसरों से प्रशंसा पाने के लिए संघर्ष करते हैं, बस इतना ही।

आप अपनी जीत की तलाश में सब कुछ खो सकते हैं - अपनी आत्मा, उस मासूमियत को जो आपको आनंद दिलाती है, शांति, मौन, और सब कुछ जो आपको अपने दिव्य से जोड़ता है। फिर भी, समाज कहता है कि आपने जीत हासिल की है। दुनिया के लिए, जीत का मतलब है अपने अहंकार को संतुष्ट करना। लेकिन मेरे विचार में, असली जीत का मतलब है आनंद रहना। यह कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई मुझे जानता है या नहीं। अगर मैं आनंद हूँ, चाहे मेरे हालात कुछ भी हों, तो यह मेरी नज़र में अंतिम जीत है।

इस अंतर को याद रखें, क्योंकि सिर्फ संसार में सफलता पाने के लिए, कई लोग अंतर-मार्गदर्शन को खोजकर उसी में रहना चाहते है। लेकिन अंतर-मार्गदर्शन उनके लिए सिर्फ निराश, निरुत्साह और आशाभंग के कारण बनता है। वास्तव में, वे पहले सच्चे अंतर्ज्ञान को नहीं पा सकते हैं, और अगर वे पाते भी हैं, तो भी वे दुखी रहेंगे। इसका कारण यह है कि उनका लक्ष्य दुनिया से मान्यता और अहंकार की संतुष्टि है, असली आनंद नहीं।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि अंतर्ज्ञान दुनियावी सफलताओं की ओर नहीं ले जा सकता। मैं विजय के मूल्य को भी नकार नहीं रहा हूँ। इसका अपना स्थान है। लेकिन मैं कह रहा हूँ कि यह पर्याप्त नहीं है। यहाँ, मैं उन विजयों की बात कर रहा हूँ जो आनंद लाती हैं। और मैं कह रहा हूँ कि विजय तभी मिलती है जब आपको अपने दिव्य का साथ मिलता है। इसका मतलब है विजय-आधारित चेतना से आनंद-आधारित चेतना की ओर ले जाना ही मेरा उद्देश्य है। जीत और हार अंधकार और प्रकाश की तरह हैं - वे आते और जाते हैं। एक बार जब आप हार को समझ लेते हैं और अपने भीतर आवश्यक परिवर्तन करते हैं, और आनंद-आधारित चेतना में प्रवेश करते हैं, तो आपको तुरंत वह परिणाम मिलेगा जो आपके योग्य है।

अगर आप अपनी आत्मा से जुड़े रहते हैं, तो आप हमेशा आंतरिक दुनिया में विजय प्राप्त करेंगे। लेकिन अगर आप नश्वर चीजों या दुनियावी सफलता पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं,

तो बुद्धिमान, प्रतिस्पर्धी, ईर्ष्यालु और अनुचित लोगों का अनुसरण करें। फिर आप पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन आप खुद को और अपने शाश्वत दिव्य को खो देंगे। इसलिए, अगर आप इस दुनिया में कुछ हासिल करना चाहते हैं, तो आंतरिक मार्गदर्शक की आवाज़ न सुनें।

तो अपने मन में स्पष्टता लाएं और विजय-आधारित चेतना में न रहें। विजय इस दुनिया में सबसे बड़ी हार है। इसलिए, विजय प्राप्त करने का प्रयास न करें, नहीं तो आप हार का सामना करेंगे। सोचें कि कैसे हमेशा ऐसी आनंद में रहा जाए जो बाहरी प्रतिभा पर निर्भर न हो। केवल तभी आपके जीवन में आश्चर्य होंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.